BY: Dr. Hameeda Shaheen (Guest Faculty),
Department of Psychology, Raja Singh College, Siwan.

समाज मनोविज्ञान की विधियाँ: सहसम्बन्ध-विधि (Methods of Social Psychology: Correlational Method)

समाज मनोविज्ञान में कुछ विशेष सामाजिक समस्याओं के अध्ययन के लिए सहसम्बन्ध-विधि का उपयोग करना आवश्यक बन जाता है। कूक्स (Crooks, 1991) के अनुसार, "सहसम्बन्ध-विधि का तात्पर्य उन सांख्यिकीय विधियों से है, जिनका उपयोग अपनी-रुचि के दो चरों के बीच सम्बन्ध के प्रकार एवं मात्रा के मापन तथा वर्णन के लिए किया जाता है।" ("Correlational method refers to statistical methods used to assess and describe the amount and type of relationship between two variables of interest.")

कुछ समस्याएँ या प्रश्न ऐसे होते हैं जिनका समाधान प्रयोगात्मक विधि, सर्वेक्षण विधि, प्रत्यक्ष प्रेक्षण विधि अथवा व्यक्ति अध्ययन विधि से संभव नहीं होता है। जैसे- एक सामाजिक समस्या यह हो सकती है कि साम्प्रदायिकता (communalism) तथा बुद्धि के बीच क्या सम्बन्ध है। इस समस्य के समाधान हेतु सबसे उत्तम एवं उपयुक्त सहसम्बन्ध उपामगम (correlational approach) होगा। प्रतिदर्श (sample) के सदस्यों पर बुद्धि परीक्षण तथा साम्प्रादायिक्ता परीक्षण का उपयोग करके अलग-अलग प्राप्तांक (scores) एकत्र किये जायेंगे। फिर प्राप्तांकों के दोनों सेटों के बीच सहसम्बन्ध गुणांक (co-efficient of correlation) निकाला जायेगा, जिससे पता चलेगा कि इन दोनों चरों (बुद्धि तथा साम्प्रदायिकता) के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध (positive correlation) है, ऋणात्मक सहसम्बन्ध (negative correlation) है अथवा शून्य सहसम्बन्ध (zero correlation) है।

धनात्मक सहसम्बन्ध का अर्थ यह है कि एक चर में वृद्धि होने पर दूसरे चर में भी वृद्धि होगी और एक चर में ह्रास (decrement) होने पर दूसरे चर में भी ह्रास होगा। जैसे-बुद्धि के बढ़ने पर साम्प्रदायिकता भी बढ़े अथवा बुद्धि के घटने पर साम्प्रदायिकता भी घटे तो इसे धनात्मक सहसम्बन्ध कहेंगे। इसका प्रसार (range) + 0.00 से + 1.00 तक होता है।

ऋणात्मक सहसम्बन्ध का अर्थ यह है कि एक चर में वृद्धि (increment) होने पर दूसरे चर में ह्रास (decrement) होगा अथवा एक चर में ह्रास होने पर दूसरे चर में वृद्धि होगी। जैसे-यदि बुद्धि अधिक होने पर साम्प्रादायिकता कम हो अथवा बुद्धि कम होने पर साम्प्रदायिक अधिक हो तो, ऐसे सम्बन्ध को ऋणात्मक सहसम्बन्ध कहा जायेगा। ऋणात्मक सहसम्बन्ध को और भी स्पष्ट करने के लिए एक दूसरे उदाहरण पर ध्यान दें। वयस्क आयु (adult age) तथा शारीरिक शक्ति (physical strength) के बीच ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। वयस्कों की बढ़ती हुई आयु के साथ शारीरिक शक्ति घटती जाती है। ऋणात्मक सहसम्बन्ध का प्रसार -0.00 से -1.00 तक होती है।

Dr. Hameeda Shaheen, Dept. of Psychology, Raja Singh College, Siwan.

शून्य सहसम्बन्ध का अर्थ यह है कि दोनों चरों के बीच कोई निश्चित सम्बन्ध नहीं है अर्थात् दोनों चर एक-दूसरे स्वतंत्र (independent) है। जैसे–यदि साम्प्रदायिकता तथा बुद्धि के बीच शून्य सहसम्बन्ध गुणांक (co-efficient of correlation) पाया जाये तो इसका अर्थ यह हुआ कि साम्प्रदायिक तीव्र बुद्धि के लोगों में अधिक होगी अथवा मन्द बुद्धि के लोगों में, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है। इसे और भी स्पष्ट करने हेतु एक दूसरे उदाहरण पर ध्यान दें। सिक्का उछालने के प्रशिक्षण (tossing training) तथा पठन-योग्यता (reading ability) के बीच शून्य सहसम्बन्ध होगा। इसे शून्य के रूप में व्यक्त किया जाता है।

+1.00 सहसम्बन्ध गुणांक को पूर्ण धनात्मक सहसम्बन्ध (perfect positive correlation) कहते हैं। 0.00 से +.20 तक के सहसम्बन्ध को नगण्य (negligible), +.21 से +.40 तक के सहसम्बन्ध को मध्यम (moderate), +.41 से+.70 तक के सहसम्बन्ध को मध्यम उच्च (moderately high) तथा +.71 से +. 90 तक के सहसम्बन्ध को बहुत उच्च (very high) सहसम्बन्ध कहते हैं। इसी तरह -1.00 को पूर्ण ऋणात्मक सहसम्बन्ध (perfect negative correlation), -0.00 से -.20 तक नगण्य, -21 से -.40 तक मध्य,-.41 से -.70 तक मध्यम उच्च तथा -.71 से -.90 तक बहुत उच्च सहसम्बन्ध कहलाते हैं।

गुण या लाभ (Merits or Advantages)

(i) सहसम्बन्ध विधि या सहसम्बन्ध उपागम (correlational approach) का एक गुण यह है कि इसके द्वारा दो चरों के बीच सम्बन्ध की दिशा (direction of relationship) की निश्चित जानकारी मिल जाती है। जैसे-जब हमें इस विधि के उपयोग से जानकारी मिलती है कि साम्प्रदायिकता तथा बौद्धिक योग्यता के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध है तो हमें ज्ञात हो जाता है कि मन्द बुद्धि की अपेक्षा तीव्र बुद्धि के लोगों में साम्प्रदायिकता अधिक पायी जायेगी।

(ii) इस विधि का एक गुण यह भी है कि इसके आधार पर दोनों चरों के बीच सम्बन्ध की मात्रा (degree) की जानकारी भी मिल जाती है। इस विधि से जहाँ एक ओर दो चरों के बीच धनात्मक (positive) या ऋणात्मक (negative) सहसम्बन्ध का पता चलता है, वहीं दूसरी ओर धनात्मक या ऋणात्मक सहसम्बन्ध की मात्रा का भी बोध होता है। यह मात्रा + 1.00 से लेकर +0.00 अथवा -1.00 से -0.00 के बीच कुछ भी हो सकती है।

(iii) क्रूक्स (Crooks, 1991) ने इस विधि के गुणों की चर्चा करते हुए कहा है कि इस विधि से प्राप्त परिणाम के आलोक में भविष्यवाणी करना सहज रूप से सम्भव होता है। जैसे-इस विधि से यदि साम्प्रदायिकता तथा बौद्धिक योग्यता के बीच उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हो तो इस आधार पर भविष्यवाणी की जा सकती है कि तीव्र बुद्धि के लोग अधिक साम्प्रदायिक होंगे। अतः उनसे सावधान रहना चाहिए।

(iv) क्रूक्स (Crooks) के अनुसार इस विधि में गणितीय मूल्य पाया जाता है। इस गणितीय मूल्य पर आधारित सूचनायें अधिक विश्वसनीय (reliable) तथा वैध (valid) होती हैं।

Dr. Hameeda Shaheen, Deptt. of Psychology, Raja Singh College, Siwan.

(v) इस विधि में यथार्थता (adequacy) तथा परिशुद्धता (precision) का गुण पाया जाता है। इस दृष्टिकोण से भी यह विधि अन्य विधियों की तुलना में अधिक वैज्ञानिक है।

अवगुण या सीमाएँ (Demerits or Limitations)

कई गुणों के होते हुए भी इस विधि के कुछ दोष या अवगुण भी हैं, जो निम्नलिखित हैं:

(i) कूक्स (Crooks) के अनुसार इस विधि का सबसे बड़ा-दोष यह है कि इसके आधार पर प्राप्त परिणामों की व्याख्या करते समय यह भूल हो जा सकती है कि दो चरों के बीच प्राप्त सम्बन्ध से एक चर को कारण (cause) और दूसरे चर को प्रभाव (effect) मान लिया जाये। कारण, दोनों चरों के बीच धनात्मक तथा ऋणात्मक सहसम्बन्ध की स्थिति में कभी तो उनके बीच कारण-प्रभाव (cause-effect) सम्बन्ध होता है और कभी नहीं होता है। जैसे-जब-जब कोई चालक (driver) नशा की हालत में गाड़ी चलाता है तो वह भूलें अधिक करता है। यहाँ नशा तथा भूल के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध है, जिसमें सचमुच एक चर (नशा) कारण है और दूसरा चर (भूल) प्रभाव है। अतः दोनों में कारण-प्रभाव का सम्बन्ध (cause-effect relationship) होता है। लेकिन हमेशा ऐसा नहीं होता है। कभी-कभी दोनों चरों के बीच धनात्मक या ऋणात्मक सहसंबंध होने का कारण कोई तीसरा चर होता है। ऐसी स्थिति में किसी गलत निष्कर्ष पर पहुँचने की पूरी सम्भावना बन जाती है।

(ii) इस विधि का उपयोग सीमित क्षेत्र में ही संभव होता है। समाज मनोविज्ञान की अधिकांश समस्याएँ ऐसी हैं, जिनका समाधान सहसम्बन्ध विधि से संभव नहीं है।

(iii) इस विधि में लचीलापन (flexibility) का अभाव पाया जाता है। अतः लचीलापन वाली समस्याओं का समाधान सहसम्बन्ध-विधि से संभव नहीं है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि समाज मनोविज्ञान की एक विधि के रूप में सहसम्बन्ध-विधि अथवा सहसम्बन्ध-उपागम की उपयोगिता सीमित है।

Dr. Hameeda Shaheen, Deptt. of Psychology, Raja Singh College, Siwan.